# श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

## ॥ श्री गीत गोविंद॥

जय राधे जय राधे राधे, जय राधे जय श्री राधे।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण, जय कृष्ण जय श्री कृष्ण॥

श्यामा गौरी नित्य किशोरी, प्रीतम जोरी श्री राधे।
रसिक रसीलो छैल छबीलो, गुण गर्वीलो श्री कृष्ण॥ 1 ॥

रासविहारिणी रसविस्तारिणी, प्रिय उर धारिणी श्री राधे।
नव-नवरंगी नवल त्रिभंगी, श्याम सुअंगी श्री कृष्ण ॥ 2 ॥

प्राण पियारी रूप उजियारी, अति सुकुमारी श्री राधे।
कीरतिवन्ता कामिनीकन्ता, श्री भगवन्ता श्री कृष्ण ॥ 3 ॥

शोभाशयनी मोहानयनी, कोकिलबयनी श्री राधे।
नैन मनोहर महामोदकर, सुन्दरवरतर श्री कृष्ण ॥ 4 ॥

चन्द्राबदनी वृन्दारकनी, शोभासदनी श्री राधे।
परम उदारा प्रभा अपारा, अति सुकुमारा श्री कृष्ण ॥ 5 ॥

हंसा गमनी राजत रमनी, क्रीड़ा कमनी श्री राधे।
रूप रसाला नयन विशाला, परम कृपाला श्री कृष्ण ॥ 6 ॥

रंजनबेली रतिरसहेली, अति अलबेली श्री राधे।
सब सुखसागर सब गुण आगर, रूप उजागर श्री कृष्ण ॥ 7 ॥

रमणीरम्या तरुणीगम्या, भक्ताकम्या श्री राधे।
धाम निवासी प्रभा प्रकाशी, सहज सुहासी श्री कृष्ण ॥ 8 ॥

शक्त्याह्लादिनि अतिप्रियवादिनि, उरउन्मादिनि श्री राधे।
अंग-अंग टोना सरस सलोना, सुभग सुछौना श्री कृष्ण ॥ 9 ॥

गौरलभामिनि गुणअभिरामिनि, हरिप्रियास्वामिनी श्री राधे।
गोपी प्रियतम यशोमति हियसम, वृंदावनरम श्री कृष्ण ॥ 10 ॥

जय राधे जय राधे राधे, जय राधे जय श्री राधे।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण, जय कृष्ण जय श्री कृष्ण॥

## ॥ गीतम् 3 ॥

(अथ तृतीयप्रबन्धो वसन्तरागेण रूपकताले गीयते)

ललितलवङ्गलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे ।
मधुकरनिकरकरम्बितकोकिलकूजितकुञ्जकुटीरे ॥

विहरति हरिरिह सरसवसन्ते
नृत्यति युवतिजनेन समं(म्) सखि विरहिजनस्य दुरन्ते ॥ 1॥ विहरति

उन्मदमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे ।
अलिकुलसं(ङ्)कुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे ॥ 2॥ विहरति

मृगमदसौरभरभसबशं(वँ)वदनवदलमालतमाले ।
युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिं(म्)शुकजाले ॥ 3॥ विहरति

मदनमहीपतिकनकदण्डरुचिकेसरकुसुमविकासे ।
मिलितशिलीमुखपाटलपटलकृतस्मरतूणविलासे ॥ 4॥ विहरति

विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे ।
विरहिनिकृन्तनकुन्तमुखाकृतिकेतकदन्तुरिताशे ॥ 5॥ विहरति

माधविकापरिमललिते नवमालिकयातिसुगन्धौ ।
मुनिमनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबन्धौ ॥ 6॥ विहरति

स्फुरदतिमुक्तलतापरिरम्भणमुकुलितपुलकितचूते ।
वृन्दावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते ॥ 7॥ विहरति

श्रीजयदेवभणितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारम् ।
सरसवसन्तसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारम् ॥ 8॥ विहरति